ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि। ऋ. 2/23/2
हे प्रभो ! सम्पूर्ण विद्याओं के आदि मूल आप ही हैं।
O Lord ! you are the fountain head of all knowledge.

वर्ष 38, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 अप्रैल, 2015 से रविवार 12 अप्रैल, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सामयिक चर्चा

धार्मिक मान्यता बनाम कर्त्तव्य

सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस कुरियन जोसफ द्वारा चीफ जस्टिस श्री दत्तू द्वारा गुड फ्राइडे (Good Friday) के दिन आयोजित बैठक, जिसे देश के प्रधानमन्त्री मोदी जी द्वारा सम्बोधित करना था, का बहिष्कार कर दिया गया एवं प्रधान मन्त्री कार्यालय को पत्र लिखकर यह सलाह दी गई कि ईसाइयों के त्यौहार के दिन वह किसी भी आयोजन में भाग नहीं ले सकते और यह भी कहा गया कि इस प्रकार के आयोजन होली, दिवाली, ईद आदि के दिन आयोजित नहीं होते तो फिर गुड फ्राइडे के दिन क्यों किया गया। भारतीय संविधान हर किसी को उसकी धार्मिक मान्यताओं का पालन करने का अधिकार प्रदान करता हैं। हालांकि सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दत्तू द्वारा कर्त्तव्य को धार्मिक मान्यताओं पर प्राथमिकता देने की सलाह कुरियन जी को दी गई।

जस्टिस कुरियन जोसफ के पत्र की समीक्षा

1. पत्र को सार्वजानिक कर मीडिया में प्रचारित कर जस्टिस कुरियन क्या यह दिखाने का प्रयास नहीं कर रहे कि भारत अभी तक सेक्युलर था मगर जब से मोदी जी की सरकार सत्ता में आई है, तब से अल्पसंख्यक विशेष रूप से ईसाइयों को प्रताड़ित किया जा रहा हैं। सुप्रीम कोर्ट के जज के साथ यह बर्ताव है तो बाकी का क्या हाल होगा। कुरियन जी इस पत्र को व्यक्तिगत रूप से भी भेज सकते थे। क्या यह जनता द्वारा बहुमत से चुनी गई देश की सरकार की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर छवि खराब करने का सुनियोजित षड्यन्त्र नहीं प्रतीत होता वह भी उस व्यक्ति द्वारा जिसने पद और गोपनीयता की शपथ ली हैं।

2. धार्मिक मान्यता बड़ी या कर्त्तव्य बड़ा यह जानना अत्यन्त आवश्यक है। यह भ्रान्ति इसलिए पैदा हुई क्योंकि लोग धर्म के स्थान पर मत की मूलभूत मान्यताओं को ही धर्म समझ बैठे हैं। धर्म व्यक्ति को श्रेष्ठ कर्म करने का सन्देश देता है जबकि मत उसकी मान्यताओं का पालन करने पर अधिक जोर देता है। अगर मान्यता को कर्त्तव्य से ऊपर रखा जायेगा तब तो देश में अराजकता फैल जाएगी। देश की सेना में 90% सैनिक हिन्दू हैं। क्या वे दिवाली, होली पर देश की सीमाओं को असुरक्षित छोड़कर दिवाली मनाने के लिए अपने अपने घर आ जाते हैं? इसी प्रकार से देश में विभिन्न अस्पतालों में कार्य कर रहे 90% डॉक्टर हिन्दू है क्या वे दीवाली, होली की रात अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते अथवा सभी अस्पतालों पर ताला लगाकर मरीजों को उन्हीं के हाल पर छोड़कर अपनी धार्मिक मान्यताओं का पालन करने बैठ जाते हैं? इसी प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन पुलिस, बिजली-पानी विभाग, फायर ब्रिगेड, ट्रैफिक व्यवस्था सँभालने वाले, सभी आपत्कालीन सेवाएं, रात दिन कार्य करने वाले वैज्ञानिक एवं शोधकर्ता से लेकर देश की सुरक्षा से सम्बंधित सभी अधिकारी निभाते हैं। सत्य यह है कि वे कर्त्तव्य रूपी स्वधर्म का पालन कर रहे होते हैं जो मत-मतान्तर कि मान्यताओं से बहुत ऊपर एवं मानने योग्य भी है।

3. जहाँ तक मोदी जी की सरकार का प्रश्न है कुरियन जी यह क्यों भूल गए कि मोदी जी भारत देश के प्रथम प्रधानमंत्री है जिन्होंने दिवाली की रात अहमदाबाद में स्वपरिजनों के साथ नहीं अपितु बाढ़ पीड़ित कश्मीर के मुसलमानों के साथ राहत कार्य का निरीक्षण करते हुए गुजारी। देश के कर्मशील प्रधानमन्त्री से प्रेरणा लेने के स्थान पर आप उनकी सार्वजनिक आलोचना पर उतर आये यह अपनी संकीर्ण मानसिकता का बोधक हैं। यही नहीं मोदी जी द्वारा सरकारी छुट्टी वाले दिन जैसे वाल्मीकि दिवस, स्वतंत्रता दिवस आदि पर सभी अधिकारियों को साथ लेकर स्वच्छ भारत अभियान के लिए तो कार्य किया गया उसकी आप अनदेखी कैसे कर सकते हैं।

4. आपने कभी सुना कि पूर्व राष्ट्रपति एवं भारत के महान वैज्ञानिक अब्दुल कलाम आजाद जिस समय भारत को सुदृढ़ एवं सुरक्षित बनाने के लिए विभिन्न मिसाइलों पर शोध कर रहे थे तब वह रात दिन कार्य न करके पांच बार नमाज के लिए विराम लेते थे। नहीं सुना होगा क्योंकि अगर वह अपनी निजी मान्यता को अपने कर्त्तव्य से ऊपर रखते तो वह कभी भी महान वैज्ञानिक नहीं बन पाते।

-डॉ विवेक आर्य

Read this article online at vedictruth.blogspot.in/2015/04/blog-post_4.html

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

11वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

दिनांक	आयोजन स्थल	आवेदन की अन्तिम तिथि
रविवार 3 मई, 2015	आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली-95	23 अप्रैल, 2015

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के 11वें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हैं। **यह परिचय सम्मेलन 3 मई, 2015 (रविवार) को आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली-95 में** आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम प्रति सम्मेलन **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **23 अप्रैल, 2015** तथा तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी दोनों स्थानों पर तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम सप्लीमैंट्री पुस्तिका में प्रकाशित किए जाएंगे जोकि केवल सभा की वैबसाईट पर प्रकाशित होगी तथा वहीं से डाउनलोड की जा सकेगी।

निवेदक : श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428) एस. पी. सिंह, **संयोजक, दिल्ली** (09540040324)

आचार्य बलेदव जी की अध्यक्षता में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न

प्रत्येक प्रान्तीय सभा द्वारा वर्ष में एक बार एवं दिल्ली में दो बार आयोजित किए जाएंगे वैवाहिक परिचय सम्मेलन

अन्य पारित प्रस्तावों एवं लिए गए निर्णयों की जानकारी अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी

वेद-स्वाध्याय

परमेश्वर की स्तुति का पार पाना असम्भव

तुंजेतुंजे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः। न विन्धे अस्य सुष्ट तिम् ।।
ऋ० 1/7/7: अथर्व० 20/70/13
ऋषिः - **मधुच्छन्दाः**।। देवता- **इन्द्रः**।। छन्दः- **गायत्री**।।

शब्दार्थ - **तुंजेतुंजे** - एक एक दान पर मैं **वज्रिणः इंद्रस्यपापपर्जन** इंद्र की **ये उत्तरे स्तोमाः** - अधिक-अधिक स्तुति करता जाता हूं, उन सबसे भी **अस्य सु स्तुतिम्** -उसकी स्तुति का पार **न विन्धे**- नहीं पाता हूं

विनय- भगवान ने मुझ पर कितनी कृपा की है, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मेरे कल्याण के लिए जब जिस वस्तु की आवश्यकता हुई, तभी वह वस्तु कहीं से आ मिली। वह कल्याणस्वरूपिणी माता पुत्र की एक एक आवश्यकता को पूर्ण रूप से जानती हुई चिंतापूर्वक देती जाती है। ओह, उसकी करुणा अपार है! भगवान के इस जगत में रहने वाले बहुत से मनुष्य न जाने क्यों संतोष का परित्याग किये रहते हैं और घबराते हैं । वे या तो प्रत्येक प्राणी को दी गई भगवान की स्वाभाविक देन का मूल्य नहीं समझते या वे अकृतज्ञ हैं। पहली बात ही ठीक समझी जा सकती है, पर मैं तो यहीं कहूंगा और बिना थके कहता जाऊंगा कि पाप से हटाने वाले उस परमैश्वर्ययुक्त इन्द्र भगवान ने मुझे निहाल कर दिया है, मुझे पाप और दुःख के गर्त्त ने उबारा है। एक के पश्चात एक ऐसा आंतरिक सुख मिलता गया है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। जब-जब उसकी ये देनें याद आती हैं तो आनंदाश्रुओं से मैं गद्गद हो जाता हूं और मेरे मुख से कृतज्ञता-भरी वाणी से उसके गुणों के गान निकलने लगते हैं; उसके स्तोत्र गाता जाता हूं, परंतु तृप्ति नहीं होती । ओह, यह अपूर्ण वाणी हृदय के अनुभूत भाव को पूर्णतया कहां प्रकट कर सकती है! फिर भी मैं पूर्णता की आशा में बार-बार गाता जाता हूं, परंतु स्तुति कभी पूरी नहीं होती। यह कभी अनुभव नहीं हो पाता कि उसकी जी भर के स्तुति हो गई। ओर, उसकी स्तुति का कौन पार पा सकता है! "अपार तेरी दया, अपार तेरी दया!"

- **आचार्य अभयदेव**
वैदिक विनय से साभार

'गोहत्या बन्द' के प्रयास में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पत्र

सही करने का पत्र
ओ३म्

ऐसा कौन मनुष्य जगत् में है, जो सुख के लाभ होने में प्रसन्न और दुःख की प्राप्ति में अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के लिए अपने उपकार में स्वयं आनंदित होता है, वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिये। क्या ऐसा कोई भी विद्वान् भूगोल में था, है और होगा, जो परोपकाररूप धर्म और पर हानिस्वरूप अधर्म्म के सिवाय धर्म वा अधर्म की सिद्धि कर सके? धन्य वे महाशय जन हैं, जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निन्दनीय मनुष्य वे हैं, जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन,मन और धन से जगत् में परहानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं। सृष्टि क्रम से ठीक-ठीक यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो-जो वस्तु बनाया है, वह-वह पूर्ण उपकार लेने के लिए है। अल्प लाभ से महाहानि करने के अर्थ नहीं। विश्व में दो ही जीवन के मूल हैं, एक अन्न और दूसरा पान,इसी अभिप्राय से आर्य्यवर शिरोमणि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। अब भी इन गाय, बैल, और भैंस को मारने और मनवाने देना नहीं चाहते हैं। क्योंकि अन्न और पान की बहुताई इन्हीं से होती है। इससे सब का जीवन सुख से हो सकता है। जितना राजा और प्रजा का बड़ा नुकसान इन के मारने और मरवाने से होता है, उतना अन्य किसी कर्म से नहीं। इस का निर्णय गोकरुणानिधि पुस्तक में अच्छे प्रकार प्रकट कर दिया है अर्थात् एक गाय के मारने और मरवाने से ४,२०,००० चार लाख बीस हजार' मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इस लिए हम सब लोग स्वप्रजा की हितैषिणी श्रीमती राजराजेश्वरी क्विन विक्टोरिया की न्याय-प्रणाली में जो यह अन्याय रूप बड़े-बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं की हत्या होती हैं इस को इन के राज्य में से प्रार्थना से छुड़वा के अति प्रसन्न होना चाहते हैं। यह हम को पूरा निश्चय है कि विद्या,धर्म्म प्रजा-हित-प्रिय श्रीमती राजराजेश्वरी क्विन् महाराणी विक्टोरिया पार्लियामेण्ट सभा और सर्वोपरि प्रधान आर्य्यवर्त्तस्थ श्रीमान् गवर्नर जनरल साहिब बहादुर सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भैंस की हत्या को उत्साह और प्रसन्नता पूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करें। देखिये कि उक्त गाय आदि पशुओं के मारने और मरवाने से दूध घी और किसानों की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्य प्रति अधिक अधिक हो जाती है। पक्षपात छोड़ के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म्म और पर-हानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और सिद्धांत नहीं है कि जिस जिस से अधिक उपकार हो उस उस का पालन, वर्धन करना और नाश कभी न करना। परम दयालु न्यायकारी सर्वान्तर्यामी सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस समस्त जगदुपकारक काम करने में एकमत्य करे।।

चुन्नीलाल प्रेस हस्ताक्षर (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

नोट : गोरक्षा वाले पत्रों के साथ यह सही करने वाला पत्र छपा हुआ पत्र बहुत स्थानों को भेजा गया। मूल मुद्रित पत्र मा. मामराज फर्रुखाबाद से लाए थे।
साभार- 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन'

वर्तमान समय में भारतवर्ष के प्रान्तों में मात्र दो प्रान्तों के मुख्यमंत्रियों ने भारतीयों के हृदय की भावना को समझते हुए गाय-गंगा और गौरी के सूत्र को सन्देश के रूप में जनमानस तक पहुँचाने के लिए गम्भीर निर्णय (कानून) पारित किए जिसमें 'गाय की हत्या पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाते हुए 'गोहत्या-बन्द' कानून लागू किया। वास्तव में ये सरकार तो बधाई के पात्र हैं ही साथ ही यह भावना महर्षि दयानन्द सरस्वती के देशोत्थान कार्यों में से एक प्रमुख कार्य था जिसके लिए उन्होंने भरपूर प्रयत्न भी किए, परंतु राष्ट्र परतंत्रता का अभिशाप भी झेल रहा था। परंतु आज देश को स्वतंत्र हुए 67 वर्ष व्यतीत हो चुके है। अब आकर के गाय के परित्राण के लिए उजाले की कुछ किरणें नजर आईं देर ही से सही परंतु यह निश्चित हो गया कि महर्षि का स्वप्न एक दिन अवश्य पूर्ण होगा। गो उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने स्तर पर वृहद् प्रयास किया जिसके लिए उन्होंने 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक के माध्यम से समझाया तथा यदा कदा उनके पत्रों के माध्यम से भी इसका विस्तृत विवरण मिलता है, इसी उद्देश्य से महर्षि द्वारा लिखित एक पत्र पाठकों के ज्ञानार्जन हेतु इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है। -सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

एक ऐसा अभियन्ता जिसने जीवन भर कभी घूस न ली

पं. श्री गंगाराम जी ग्राम बजवाड़ा जिला होशियारपुर (पंजाब) में जन्मे एक आर्य पुरुष थे। इसी कस्बे में महात्मा हंसराजजी का जन्म हुआ था। पंडित गंगारामजी ने अमृतसर में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे। आपने पंजाब मैट्रिक में प्रथम स्थान प्राप्त किया, फिर ओवरसीयर बने।

आपने 28 वर्ष तक सरकारी नौकरी की परंतु विचित्र बात यह कि जितना वेतन पहले दिन लिया था, उतने पर ही सेवा-मुक्त हुए। उन दिनों कोई वेतनमान भी न होते थे,परन्तु वेतन-वृद्धि तो होती ही थी। आपके कार्य की, प्रामाणिकता की, दक्षता की सब अंग्रेज़ अधिकारी भी प्रशंसा करते थे, परंतु आपने कभी वेतन-वृद्धि माँगी ही नहीं।

आप सब डिविज़नल अफिसर भी थे। उनके कार्य की विस्तृत रूपरेखा जाननेवाला, इनके ऊपर कोई भी अधिकारी नहीं था तथापि आपने सारे जीवन ऐसी अर्थ-शुचिता दिखाई कि अपने-बेगाने सब आपके चारित्रिक गुणों का यशोगान करते थे। जब अन्य अभियन्ता ओवरसियर दोनों हाथों से धन बटोरा करते थे तब आपने कभी ऐसा सोचा तक नहीं।

पंडित गंगाराम जी ने स्वयं इसके विषय में लिखा है," मैं बहुत कुछ गड़बड़ कर सकता था, परंतु मैं महर्षि दयानन्द और उसके आर्यसमाज का कृतज्ञ हूँ कि उसका सेवक होने के कारण मेरा मन ऐसे अनुचित कार्यों की ओर कभी प्रवृत्त नहीं हुआ"। शेख असगर अलीजी मुल्तान के डिप्टी कमिश्नर भी रहे, आपने पंडित जी के कैरक्टर रौल (चरित्र-पंजिका) में एक से अधिक बार लिखा था- पूर्णतया प्रामाणिक।

पंडित जी को इतना सन्तोष कैसे प्राप्त था ? वे स्वयं लिखते हैं कि मुजफ़्फरगढ़ में उन्हें दलितों, अनाथों व दुखियाजनों तथा आर्यसमाज की सेवा का जो विस्तृत क्षेत्र मिल गया, इसे वे सर्वश्रेष्ठ धन व प्रभु की देन मानते थे। - **साभार** -

तड़पाने वाले, तड़पाती जिनकी कहानियाँ

अब आर्यसमाज की सूचनाएं पाएं व्हाट्स एप्प पर
आर्य समाज से जुड़ने व सोशल मीडिया द्वारा आर्य समाज सम्बन्धी सूचना 'व्हाट्स एप' पर प्राप्त करने के लिए इस नम्बर 09540045898 को अपने फोन में सेव करके इस नम्बर पर अपना नाम एवं राज्य लिखकर भेजें, ध्यान रहे जब तक आपके फोन में ये नम्बर सेव रहेगा तभी तक सूचना आप तक पहुँच पाएगी। - ***महामन्त्री***

अल्पसंख्यक के नाम पर आतंकवाद

- डॉ. विवेक आर्य

गत एक माह में हमारे देश में कुछ घटनाएँ हुई हैं जिसमें यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि भारत देश में ईसाई समाज आतंकित है, उसे प्रताड़ित किया जा रहा है। मोदी सरकार के सत्ता में आने के पश्चात ही ईसाइयों पर अत्याचार आरम्भ हुआ है। यह घटनाएँ हैं दिल्ली के कुछ चर्चों में हुई चोरी एवं तोड़फाड़, संघ प्रमुख भागवत द्वारा मदर टेरेसा का सेवा की आड़ में धर्मान्तरण करने पर प्रश्न करना, हिसार के कैमरी गांव में निर्माणाधीन ईमारत में तोड़फोड़ एवं बंगाल में डकैतों द्वारा एक ईसाई संस्था में डाका डालते समय बुजुर्ग नन से बलात्कार की घटना शामिल हैं। हम सभी घटनाओं की एक-एक करके समीक्षा कर यह जानने का प्रयास करेंगे कि सत्य क्या है।

1. दिल्ली के कुछ चर्चों में हुई चोरी एवं तोड़फोड़ - दिल्ली के कुछ चर्चों में सर्दी की धुंध में तोड़फाड़ एवं चोरी की घटनाएँ हुई जिसके विरोध ने ईसाई समाज सड़कों पर उतर कर धरना प्रदर्शन किया एवं केंद्र सरकार को उसके लिए जिम्मेदार बताया। गौरतलब है कि इस तथ्य को छुपाया गया है कि इसी काल में दिल्ली के मंदिरों में 206 और गुरुद्वारों में 30 चोरी की घटनाएँ हुई। एक मामले में दो युवकों की गिरफ्तारी हुई जिन्होंने शराब के नशे में शर्त लगाकर चर्च में तोड़फोड़ की थी। जबकि बाकी मामले अनसुलझे है। प्रश्न यह है कि मामूली चोरी की घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर उसे अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के रूप में क्यों दर्शाया जा रहा है और अगर चोरी ही प्रताड़ना करने की कसौटी है तब तो हिन्दुओं के मंदिरों में चोरी की कहीं अधिक घटनाएँ हुई हैं तो इससे तो यही अर्थ निकलता हैं कि हिन्दुओं को ज्यादा प्रताड़ित किया गया है। यह महज अनजान जनता की संवेदना एवं समर्थन को एकत्र करने की कवायद है जिससे समाज की यह धारणा बन जाए कि बहुसंख्यक हिन्दू समाज अत्याचारी है एवं अल्पसंख्यक ईसाई समाज पर अत्याचार करता है।

2. संघ प्रमुख भागवत द्वारा मदर टेरेसा का सेवा की आड़ में धर्मान्तरण करने पर प्रश्न करना - संघ प्रमुख मोहन भागवत का मदर टेरेसा पर दिया गया बयान कि मदर टेरेसा द्वारा सेवा की आड़ में धर्मान्तरण करना सेवा के मूल उद्देश्य से भटकना है पर ईसाई समाज द्वारा प्रतिक्रिया तो स्वाभाविक रूप से होनी ही थी मगर तथाकथित सेक्युलर सोच वाले लोग भी संघ प्रमुख के बयान पर माफी मांगने की वकालत कर रहे हैं एवं इस बयान को मदर टेरेसा का अपमान बता रहे हैं। निष्पक्ष रूप से यह विरोध चोरी तो चोरी सीनाजोरी भी है। मानवता की सच्ची सेवा में प्रलोभन, लोभ, लालच, भय, दबाव से लेकर धर्मान्तरण का कोई स्थान नहीं है। इससे तो यही सिद्ध हुआ कि जो भी सेवा कार्य मिशनरी द्वारा किया जा रहा है उसका मूल उद्देश्य ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। संत वही होता है जो पक्षपात रहित एवं जिसका उद्देश्य मानवता की भलाई है। ईसाई मिशनरियों का पक्षपात इसी से समझ में आता है कि वह केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहती है जो ईसाई मत को ग्रहण कर ले। विडंबना यह है कि ईसाइयों को पक्षपात रहित होकर सेवा करने का सन्देश देने के स्थान पर संघ प्रमुख की आलोचना अधिक प्रचारित कर रहा है। इस दोगले व्यवहार से समाज में यह भ्रान्ति पैदा होती है कि ईसाई समाज सेवा करता है और हिन्दू समाज उसकी आलोचना कर रहा है। ध्यान दीजिये अनेक हिंदुत्ववादी संगठन जैसे वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, दयानंद सेवा आश्रम, रामकृष्ण मिशन आदि संगठन निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं फिर केवल ईसाई समाज का समर्थन सेवा कार्य के नाम पर करना बुद्धिजीवी वर्ग की निष्पक्षता पर प्रश्नचिन्ह भी लगाता है।

3. हिसार के कैमरी गांव में निर्माणाधीन ईमारत में तोड़फोड़ - हिसार में कैमरी गांव में एक निर्माणाधीन ईमारत के निर्माण का जब ग्रामीणों ने विरोध किया तो गांव के लोगों पर उसे तोड़ने का आरोप लगाकर उनके खिलाफ पुलिस में आपराधिक मामला दर्ज करवा दिया गया जबकि स्थानीय पंचायत जो जनता द्वारा चुनी गई संवैधानिक संस्था है द्वारा दिए गए प्रस्तावों को दरकिनार कर इस मामले को भी राजनितिक रूप से तूल दिया जा रहा है। पंचायत का कहना हैं कि गांव के नौजवानों का नाम पुलिस थाने में दर्ज करवाकर उन्हें आतंकित किया जा रहा है क्योंकि जिस दिन यह घटना हुई उस दिन पादरी सुभाष उस गांव में उपस्थित ही नहीं था फिर उसे कैसे मालूम कि घटना में कौन शामिल था। न तो उस पूरे क्षेत्र में कोई ईसाई रहता है, न ही चर्च द्वारा खरीदी गई भूमि पर निर्माण आदि कार्य के लिए कोई पंचायत अथवा जिलाधिकारी से कोई स्वीकृति ली गई जो सरासर कानून का उल्लघंन है। इसके अतिरिक्त पादरी सुभाष पर गांव के लड़कों को शादी का प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करवाने का भी आरोप है। पंचायत के अनुसार उस पूरे इलाके में कोई भी व्यक्ति ईसाई नहीं है। ऐसे में लोगों की भावनाओं का सम्मान न कर उन्हें जबरन अपराधी दर्शाकर मीडिया के माध्यम से सहानुभूति बटोरने का जो प्रयास किया जा रहा है वह ईसाइयों द्वारा बहुसंख्यक हिन्दुओं को बदनाम करने की साजिश प्रतीत होती है।

4. बंगाल में डकैतों द्वारा एक ईसाई संस्था में डाका डालते समय बुजुर्ग नन से बलात्कार की घटना- बंगाल में डकैतों द्वारा एक ईसाई संस्था में डाका डालते समय बुजुर्ग नन से बलात्कार की घटना को चोरी, डकैती एवं बलात्कार की घटना के रूप में मानने के स्थान पर उसे धार्मिक रंग देकर राजनितिक लाभ लेने की कोशिश की जा रही है। बिना अपराधी को पकड़े सम्पूर्ण हिन्दू समाज को कटघड़े में खड़ा कर देना कहा तक उचित है। इस मामले पर वैटिकन द्वारा बयान जारी किया जाना, संसद में विभिन्न पार्टियों के 25 के करीब ईसाई सांसदों का लामबंध होकर होकर केंद्र सरकार पर दबाव बनाना, समस्त हिन्दू समाज को कोसना कहाँ तक उचित है। अपराध को अपराध ही कहे और दोषी को पकड़ कर दण्डित करे।

इस दुष्प्रचार के अनेक दुष्परिणाम हैं जैसे- कुल मिलाकर यह सब एक सोची समझी साजिश है जिसका मुख्य उद्देश्य अल्पसंख्यक के नाम पर हिन्दू समाज को आतंकित करना है जिसके पीछे संभवत ईसाई समाज द्वारा किये जा रहे विभिन्न राष्ट्रद्रोही कार्यों जैसे धर्मान्तरण आदि का हिन्दू समाज प्रतिरोध न करें ऐसा माहौल तैयार करना जिससे ईसाई समाज अपनी मनमर्जी कर सम्पूर्ण भारत को ईसाई बनाने की अपनी रणनीति को पूरा कर सके। विडंबना यह है कि अधिकतर हिन्दू समाज ईसाइयों के इस कुचक्र से न केवल अनभिज्ञ है अपितु इस विषैले प्रचार के प्रभाव से देखा-देखी ईसाइयों की हाँ में हाँ मिलाने लगता है और हिन्दू समाज के प्रति अपने मन में गलत धारणा बना लेता है। भ्रमित हिन्दू अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारते हुए तन-मन-धन से ईसाइयों की सहायता करने लगता है एवं अपने हिन्दू भाइयों की निंदा करता है। इससे वह अपने आपको सभ्य, आधुनिक एवं सेक्युलर समझने लगता है और अपने ही भाइयों को पिछड़ा, दकियानूसी एवं कट्टर सोच वाला समझने लगता है। इस सुनियोजित षडयंत्र को बौद्धिक आतंकवाद कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा। आशा है कि हमारे पाठक इस लेख को पढ़कर ईसाइयों के इस षड़यंत्र का शिकार होने से बचेंगे।

ग्रन्थ परिचय

काशी शास्त्रार्थ

प्रश्न 1: यह शास्त्रार्थ कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर:- जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह शास्त्रार्थ काशी, जो कि पौराणिकों का गढ था, में संवत् 1926 वि. कार्तिक सुदी 12, मंगलवार के दिन हुआ था।

प्रश्न 2: शास्त्रार्थ किन-किन के बीच हुआ था अथवा शास्त्रार्थ के दोनों पक्ष कौन-कौन से थे?

उत्तर :- शास्त्रार्थ स्वामी दयानंद सरस्वती जी तथा काशी निवासी स्वामी विशुद्धानंद सरस्वती तथा बालशास्त्री आदि पंडितों के बीच हुआ था।

प्रश्न 3. शास्त्रार्थ का विषय क्या था?

उत्तर:- शास्त्रार्थ का विषय मूर्तिपूजा था। इसमें स्वामी जी का पक्ष पाषाण मूर्तिपूजन आदि का मंडन करना था। यह मंडन वेद प्रमाण के आधार पर करना निश्चित हुआ था।

प्रश्न 4: क्या काशी के पंडित वेदों के आधार पर मूर्तिपूजा का मंडन कर पाये थे?

उत्तर:- नहीं, वे कोई भी ऐसा वैदिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाये जिससे मूर्ति की पूजा करना सत्य सिद्ध हो सके। यहां तक कि वे 'प्रतिमा' शब्द से अपने पक्ष का सिद्ध करना चाहते थे, वे भी नहीं कर पाये। अत: बाद में मूल विषय को छोडकर वे विषयांतर में आ गये और पुराण शब्द के विशेषण और विशेष्य विषय पर संवाद प्रारंभ हो गया।

प्रश्न 5: इस विषय पर कौन-सा पक्ष विजयी हुआ?

उत्तर:- इसमें भी काशीस्थ पंडित पुराण शब्द को विशेष्यवाची (जो उनका पक्ष था) सिद्ध नहीं कर पाये, लेकिन स्वामी दयानंद जी ने विशेष्यवाणीवाची सिद्ध कर दिया। बाद में अपनी पराजय होती देख काशीस्थ पंडितों ने दो पेज स्वामी जी के समक्ष पटक कर, वहां लिखित पुराण शब्द को विशेषण सिद्ध करने के लिए कहा। स्वामी जी अभी उसको पढ़ ही रहे थे कि वे बीच में उठकर ही शोर मचाने लगे और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

प्रश्न 6 : पूरे शास्त्रार्थ में विजयी कौन घोषित किया गया?

उत्तर :- वास्तव में काशी के लोग असभ्य व्यवहार करके, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दयानंद जी को पराजित घोषित करके तालियां आदि भी पीटने लगे। यह एकदम सभ्यता विरुद्ध व्यवहार था। बाद में काशीराज के छापेखाने से छपकर भी उन्हे बदनाम करने की कोशिश की गई।

प्रश्न 7 : हो सकता है कि इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी की ही पराजय हुई हो?

उत्तर:- इसी बात का निर्णय करने के लिए ही तो इस संपूर्ण शास्त्रार्थ को छापकर प्रकाशित किया गया, जिससे इसे पढकर सामान्य जनता भी निर्णय कर सके। इसके अतिरिक्त इस शास्त्रार्थ के समय संवत् 1926 से लेकर 1937 तक स्वामी जी, काशी में आकर बार-बार छ: बार विज्ञापन लगाते रहे कि इतना होने पर भी कोई वैदिक प्रमाण एवं युक्ति के आधार पर मूर्तिपूजा को सत्य सिद्ध करना चाहे तो सभ्यता पूर्वक विचार किया जा सकता है, परंतु कोई भी सामने न आया। स्वामी जी उपर्युक्त घटना के बाद भी पहले की भाँति ही वेदोक्त उपदेश करते रहे। यदि काशी के पंडित विजयी हुए थे तो उन्हें शास्त्रार्थ अथवा विचार करने के लिए सामने आना चाहिए था, परंतु कोई सामने नहीं आया। इससे सिद्ध होता है कि विजय स्वामी दयानंद जी की हुई थी। वस्तुत: सत्य की ही जीत होती है, कोई झूठ की नहीं।

प्रश्न 8. यह शास्त्रार्थ कहाँ से और कब प्रकाशित किया गया?

उत्तर:- वैदिक यंत्रालय से संवत् 1937 में यह शास्त्रार्थ प्रकाशित किया गया था।

प्रश्न 9. यह पुस्तक किस भाषा में है?

उत्तर : यह संस्कृत और हिंदी दोनों ही भाषाओं में लिखी गई है।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते

- डॉ. गंगा शरण आर्य

जिन लोगों ने आत्मिक ज्ञान और पुण्य को बेचने की दुकानें खोली हुई हैं वास्तव में उनके पास आत्मिक ज्ञान व पुण्य अर्थात् वैदिक ज्ञान और परोपकारी जीवन का अनुभव है ही नहीं। केवल ''सादा जीवन उच्च विचार'' वाले ज्ञानवान व पुण्यात्मा लोगों की बाह्य वेशभूषा ही शेष बची है जो उन्होंने अपना रखी है उसी को देखकर भोले-भाले लोग चढ़ावा दे देकर लुटते जा रहे हैं इसी दु:ख का अनुभव करने के कारण यह लेख प्रस्तुत है:-

बहुत सारे लोग यह सोचकर भ्रमित रहते हैं कि जो सत्कार्य वे करते हैं उनका उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता, पुण्य नहीं मिलता। दरअसल, निजी स्वार्थ के लिए किया गया कोई भी दान फलदायी नहीं होता। उदाहरण के लिए कुछ लोग यह सोचकर दान देते हैं कि पैसे फालतू पड़े हैं, काला धन है, इनकम टैक्स के झंझटों में कौन फंसे इससे तो अच्छा भगवान को चढ़ा दें। पुण्य ही मिलेगा, भगवान खुश हो जाएंगे। अब इससे स्पष्ट है कि वे एक बोझ से छुटकारा पाना चाहते हैं, इसमें लालच और चापलूसी का भी भाव है। ऐसे में दाता के मूल आंतरिक भाव के अनुसार नकारात्मक फल ही मिलेगा, पुण्य नहीं। पुण्य मिलता है करूणा में सहयोग, असहायों का सहयोग करने से और हृदय में सर्वकल्याण जैसे सच्चे सात्विक भावों से। पर ऐसे दान बहुत कम देखने में आते हैं। दान में इस बात का जरा भी महत्त्व नहीं है कि दान कितना महंगा है बल्कि दान में यह महत्त्वपूर्ण है कि दान कितनी सद्भावना, करुणा, प्रेम और परोपकार की भावना से सुपात्र को दिया गया है या नहीं। ऐसे सद्भाव से दिया गया 10 रूपया भी उतना ही पुण्य देगा जितना 10 करोड़ का दान क्योंकि दोनों अवस्थाओं में आंतरिक भाव सात्विक थे और उतने ही गहरे थे। फल 10 रूपये या 10 करोड़ रूपये के अनुसार नहीं मिलेगा बल्कि फल भीतर के मूल आंतरिक भावों के अनुसार मिलेगा। हमारा अवचेतन मन ऐसे ही काम करता है। वह हमेशा मूल भूत सच्चाई का साथ देता है। यह तो हमारा व्यावसायिक दिमाग हिसाब करता है कि 10 करोड़ दिए है तो ऊपर भगवान, आगे की सीट (वी.आई.पी.) तो दे ही देगा, थोड़ा खास ख्याल तो करेगा ही। अवचेतन मन में चापलूसी का भाव भी प्रबल है, बहती गंगा में हाथ धोने वाला भाव है। ऐसे भावों से क्या पुण्य मिलेगा? कभी नहीं।

तीर्थ यात्रा पर जाने वाले लोगों के मन में पुण्य संचय करने का भाव बड़ा तीव्र होता है और जितने भी तीर्थ स्थल हैं प्राय: पानी के स्रोत के पास ही होते हैं और प्राकृतिक मनोहारी स्थल भी होते हैं और वहाँ पाए जाने वाले मन्दिरों में किसी न किसी तपस्वी महापुरुष या काल्पनिक देवी-देवताओं का इतिहास भी सुनने को मिलता है और इसी से लोग प्रसन्न हो जाते हैं कि हमें आशीर्वाद तो मिलेगा ही, लेकिन वे तीर्थ से संबन्धित सच्चे इतिहास को नही जानते हैं जो इस प्रकार है :-

आजकल तीर्थ से अभिप्राय (अक्सर) ऐसे भौगोलिक स्थलों से लिया जाता है जहाँ विशिष्ट मन्दिर स्थापित हैं जो पुराणों के अनुसार अवतारों के जन्म या लीला स्थल रहे हैं या उनके नाम से प्रसिद्ध हैं और ये विशिष्ट नदियों यथा गंगा, क्षिप्रा, गोदावरी आदि नदियों के आस-पास अवस्थित हैं। इसी के साथ यह धारणा भी प्रचलित है कि इन तीर्थों की यात्रा करने व इन पवित्र नदियों में स्नान करने से पाप दूर हो जाएंगे व पुण्य की प्राप्ति होगी साथ ही साथ मोक्ष का सुख भी मिलेगा। यह मान्यता अवैदिक है तथा कर्म-फल के सिद्धान्त के विरुद्ध होने से भी यह मान्य नहीं। क्योंकि पाप कभी, किसी भी स्थिति में क्षमा योग्य नहीं होता, उसका फल कभी न कभी मिलता अवश्य है। अत: तीर्थ यात्रा का केवल जीवन की नीरसता में कुछ नयापन आने से चित्त की प्रसन्नता होती है तथा जानकारियों में वृद्धि होती है। नदियो में नहाने से शरीर की शुद्धि होती है इससे अधिक और कुछ नहीं। ऋषियों की दृष्टि में तीर्थ वही है, जो दु:ख सागर से पार कर दे। माता-पिता, आचार्य, विद्वान, धार्मिक उपदेशक, वानप्रस्थी, संन्यासी जो हमें यथार्थ ज्ञान सहित सत्यमार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं, तीर्थ हैं। तपस्वी-ब्रह्मनिष्ठ, तीनों प्रकार की ऐष्णाओं (पुत्रैष्णा, वितैष्णा, लोकैष्णा) का त्याग कर देने वाले, परोपकारी महात्मा हैं वे साक्षात् तीर्थ ही हैं। इनके सत्संग और तदनुकूल आचरण से दु:ख सागर से तरना सम्भव है। महर्षि दयानंद लिखते हैं कि

''वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्कर्म करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ गुण-कर्म दु:खों से तारने वाले होने से 'तीर्थ' हैं।

प्राचीन काल में ब्राह्मण, वानप्रस्थी वैदिक विद्वान संन्यासी लोगों के निवास स्थान शुद्व और प्राकृतिक मनोहारी वातावरण जहाँ शुद्व जल का स्रोत बहुत जरूरी था ऐसी जगह होते थे। वे खुद भी मूर्ति की पूजा नहीं करते थे। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाण्ड पंडित होते थे। इसलिए जन साधारण गृहस्थी लोग मार्गदर्शन के लिए उनके प्रवचनों के प्यासे रहते थे ताकि सचमुच दु:खो से तरा जा सके इसी का नाम तीर्थ यात्रा होता था अब न वहाँ सच्चे तपस्वी रहे, न वेद का ज्ञान रहा। अब चढ़ावे के अलावा वहाँ कुछ शेष बचा नहीं इसलिए आजकल तीर्थ नामक स्थलों में बैठे वेदज्ञान से कोरे पाखण्डियों के पास जाकर धन, समय, और बुद्धि भ्रष्ट करने वाले कर्मो का कोई अच्छा फल मिलने वाला नही। उपरोक्त कर्म करने से ईश्वर हमारे पाप कर्म सब भुला देगा। ऐसी धारणा रखकर मन में यही विचार लाता रहता है कि बस नाम ले लो ईश्वर का, किसी भी प्रकार से पूजा कर लो उसकी, देवी-देवता की खूब प्रशंसा करके उनको अपने पक्ष में बांध लो। नहीं तो कभी ऐसा न हो कि नाम न लेने से, उसकी तरफ न देखने से ईश्वर मेरा काम न बिगाड़ दे, धन्धा चौपट न कर दे, ढेर सारी समस्याएँ या बाधाएँ पैदा न कर दे।

सच्ची तीर्थ यात्रा एक झटका है उतेजना है, जाग जाने का संदेश है, एक एवरेस्ट की सूचना है परन्तु 99 प्रतिशत लोग तीर्थ यात्रा से लौटकर थोड़ी देर के लिए शमशान घाट का वैराग लाकर फिर उसी बेहाशी वाले जीवन मे लौट आते हैं। जैसे कोई गरमी के अन्दर ठण्डे पानी के छींटे मार आया परन्तु कुछ देर बाद फिर पसीने मे लथ-पथ हो रहा है। तीर्थ यात्रा का अर्थ है, ऐसी गंगा मे जाना जहाँ सदियों से संस्कार के रूप में पाले हुए अपने अंहकार, वासनाएँ, अनावश्यक महत्त्वाकांक्षाएं, स्वार्थ आदि सब विकार छोड़कर नए संकल्प के साथ विचारों को साफ कर उससे मुक्त हो कर जागकर, रूपान्तरित होकर, गृहस्थ जीवन को सुधार इस संसार में कीचड़ में कमल के फूल की तरह खिलना और अपनी पवित्रता और सुन्दरता का लाभ संसार को देना बस यही तीर्थ का सच्चा फल है। तीर्थ यात्रा करके जागे ही नहीं, रूपान्तरित ही नहीं हुए, तो करते रहें, ऐसी हजारों तीर्थ यात्राएँ और देते रहें दिल को झूठी तसल्ली, जीते रहें भ्रम में। संसार में किसी को कोई फर्क नही पड़ने वाला। अब तो होश में आ ही जाओ और कर लो सच्ची तीर्थ यात्रा, कहीं दूर जाकर नहीं अपने भीतर (मन मन्दिर) में जाकर। बाहर की सभी तीर्थ यात्राएँ अज्ञानवश भीतर की तीर्थ यात्रा से वंचित रहने का ठोस कारण है। अपने से और दूर जाने का सिलसिला हैं इसलिए सदियों से मानव झूठी तीर्थ यात्राएं करने के बाद भी वहीं का वहीं है। उसे सिर्फ यही मानसिक सन्तोष है कि उसने भले ही कितने ही पाप कर्म किए हों, लेकिन भगवान के दरबार में हाजिरी लगा कर या थोड़ा-बहुत दान देकर, मन्दिर बनाकर या मन्दिर-गुरूद्वारे में सेवा करके, माता के बडे-2 जागरण कर और भण्डारे करके उसने ईश्वर को सूचित कर दिया है। अब ईश्वर इतना तो करेगा ही कि नरक से बचा लेगा। आदमी भीतर की तीर्थ यात्रा से अनभिज्ञ रहता हुआ बाहर की तीर्थ यात्राओं को इतना महत्व देता है। ऐसा नही हैं कि बाहर की तीर्थ यात्राएं गैर जरूरी है या महत्त्वपूर्ण नही हैं। बाहर की तीर्थ यात्राएं आध्यात्मिक जगत मे प्रवेश कराने में सहयोग कर सकती हैं अन्तिम मंजिल या उद्देश्य तो भीतर की गंगा में डूबना है, उस पार जाना है स्वयं को तीर्थ स्थल बनाना है। तीर्थ यात्रा करना नही है स्वयं तीर्थ स्थल में रूपान्तरित हो जाना है।

वरदान प्राप्ति की खुशी और अभिशाप मिलने का डर दोनों के चक्कर मे फंसे हुए लोग यह सोचते हैं कि हमने यदि ईश्वर या किसी देवी देवता के प्रति कोई कर्म काण्ड नही किया तो हम उनके अभिशाप के भागीदार बन जाएँगे। और हमने उसको खुश करने के लिए कुछ कर्म काण्ड किया तो हमको कुछ उनसे वरदान तो मिलेगा ही। हो सकता हैं हमारे अमुक-अमुक दु:ख दर्द जो हो रहे हैं वे सब मिट जायें। पण्डे और पुजारियों ने पेट भरने के लिए आम आदमी को वरदान और अभिशाप की रस्सी से बांधा हुआ है।

हे भारतीयो! आर्यो! आर्य-पुत्रो! पांच हजार वर्ष से सोने वाले आर्य पुत्रो! उठो! इतनी गहरी और चिरनिद्रा में तुम्हारा नाम तक बदल कर 'हिन्दू' रख दिया है। दुष्टों ने तुम्हारे पवित्र ज्ञान के स्रोत 'वेद' को तुम से छीन लिया है और दे दिया है तुम्हें पाषाण व धातु आदि का परमेश्वर, वह भी एक नहीं, अनेक, वो भी भिन्न-भिन्न रूपा, ताकि हम एक 'न' हो सकें और दे दिया है तुम्हें वरदान कि अब से भगवान तुम्हें नहीं, तुम भगवान को पालोगे, नहलाओगे, वस्त्र पहनाओगे, घण्टी बजाकर सुप्त भगवान को जगाओगे, प्रात:काल उठाओगे और बुलाओगे, सभी पाप कर्मो को गर्दन झुकाते ही माफ करवाओगे।

जिसका भय था वही जेब में आ गया है, शिवालय में बन्द हो गया है, जा कहां सकता है बाहर, बिगाड़ क्या सकता है? मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता है, मुझे सभी कर्म-दुष्कर्म करने की और माफ क्यों नहीं करेगा, वह भगवान जो मेरे द्वारा दिया पहनावा पहने, मेरा दिया हुआ खावे, मेरे अन्न पर पला मेरे विपरीत क्या करेगा। जो मुझे अच्छा वह मेरे भगवान को भी अच्छा, मुझे शराब अच्छी तो मेरे भगवान को भी अच्छी, मुझे अनेक स्त्रियां अच्छी तो मेरे भगवान को भी अच्छी, मुझे बकरा अच्छा तो मेरे भगवान या देवी को भी बकरा अच्छा, जब मैं सभी कार्य करने में स्वतंत्र, स्वच्छन्द तो मेरे भगवान का तो कहना ही क्या वहे तो सर्व स्वतन्त्र, सर्व शक्तिमान चाहे तो आज लखपति बना दे, चाहे तो बिना माता-पिता के अपना बेटा बना दे। घड़े से सीता जैसी स्त्री को बना दे, कर्ण जैसे वीर को कान् से उत्पन्न कर

- शेष पृष्ठ 6 पर

'स्वामी दयानन्द : दलितों के सच्चे स्नेही एवं विकासवाद को चुनौती देने वाले विश्व के प्रथम विचारक'

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन काल में हमारा देश भारत अनेक अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों में जकड़ा हुआ था। देश भर में जन्म पर अधारित जाति प्रथा 'जन्मना जातिप्रथा' प्रचलित थी जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों व जातियों द्वारा एक-दूसरे व परस्पर छुआछूत व अस्पर्शयता का व्यवहार किया जाता था। ऐसा लगता है कि यह प्रथा पहले मध्यकाल में आरम्भ हुई और बाबर व बाद के मुस्लिम शासकों के काल में सामाजिक असमानता, विषमता तथा छुआछूत आदि में विस्तार हुआ। मध्यकाल में हमारे पण्डितों ने स्त्री व शूद्रों को एक संस्कृत का वाक्य **"स्त्री शूद्रो नाधीयताम्"** अर्थात् स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है, अध्ययन व अध्यापन से वंचित कर दिया था। जो व्यक्ति अध्ययन नहीं करेगा उसका व्यक्तिगत व सामाजिक पतन होना निश्चित है। अत: ऐसा मनुष्य या वर्ग श्रमिक बन कर ही रहेगा। यह व्यवस्था अनुचित, पक्षपातपूर्ण एवं भेदभाव वाली थी। इसने न केवल हमारे दलित बन्धुओं को ही दु:ख पहुंचाया अपितु सारा आर्य हिन्दू समाज ही इससे कमजोर व अवनत हुआ। जिन लोगों ने यह प्रथा उत्पन्न की उन्हें समाज का शत्रु ही कह सकते हैं। यदि समाज में इस प्रकार अनुचित व्यवस्थायें, अन्धविश्वास व कुरीतियां न होतीं तो देश का इतना पतन न होता जो मध्यकाल से महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना तक के काल सन् 1875 तक हुआ था। महर्षि दयानन्द के समय में जन्मना जाति व दलित बन्धुओं के प्रति अन्य वर्णों का व्यवहार अत्यन्त असम्मानजनक व छुआछूत आदि से पूर्ण था। इससे क्षुब्ध होकर उन्हें वर्ण व्यवस्था को मरण व्यवस्था तक कह डाला। महर्षि दयानन्द ने 25 जुलाई, सन् 1878 से 21 अगस्त, सन् 1878 तक रूड़की-उत्तराखण्ड में वैदिक मान्यताओं व धर्म का प्रचार किया था। वह धार्मिक व सामाजिक सुधारक थे और छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। इसका प्रमाण उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ एवं देश भर में स्थान स्थान पर दिए गये उपदेश हैं। यहां हम महर्षि दयानन्द के द्वारा रूड़की में उपदेश के दौरान घटी एक महत्त्वपूर्ण घटना को आगामी पंक्तियों में प्रस्तुत कर रहें हैं जो पूर्णतया सत्य व प्रामाणिक है। इस घटना को महर्षि दयानन्द के जीवनी लेखक पं. लक्ष्मण आर्योपदेशक ने अपने ग्रन्थ स्वामी दयानन्द का मुकम्मिल जीवन चरित् में प्रस्तुत किया है।

जीवनी लेखक ने लिखा है कि ''सफरमैना की पल्टन का एक मजहबी सिख (दलित सिख) जो श्वेत वस्त्र पहने हुए था तथा सभा में बहुत सावधानी से बैठा हुआ था स्वामी जी की प्रत्येक बात को दत्तचित्त होकर सुन रहा था कि अकस्मात् उसी समय छावनी का पोस्टमैन मुनीर खां स्वामी जी की डाक लेकर आया। वह पोस्टमैन उस मजहबी सिख को देखकर शोर मचाने लगा। यहां तक कि वह उसे मारने पर उतारु हो गया तथा चिल्लाकर कहा- रे मजहूस नापाक (गन्दे अशुभ) तू ऐसे महान् पुरूष तथा युग प्रसिद्ध व्यक्तित्व की सेवा में इतनी अशिष्टता से आकर बैठ गया है। तूने अपनी जाति की उन्हें जानकारी नहीं दी। उस समय पता करने पर ज्ञात हुआ कि वह मजहबी सिख था। वह बहुत लज्जित होकर पृथक् जा बैठा। मुनीरखां ने प्रयास किया कि उसे निकाल दिया जाए।

तब स्वामी जी ने अत्यन्त कोमलता व सौम्यता से कहा नि:सन्देह उसके यहां बैठकर सुनने में कोई हानि नहीं और उस पर कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिए। तिरस्कृत किये उस व्यक्ति ने नयनों में अश्रु भरकर तथा हाथ जोड़कर कहा कि मैंने किसी को कुछ हानि नहीं पहुंचाई। सबसे पीछे जूतियों के स्थान पर पृथक बैठा हूं। स्वामी जी ने डाकिए को कहा कि इतना कठोर व्यवहार तुम्हारे लिए अनुचित है और समझाया कि परमेश्वर की सृष्टि में सब मनुष्य समान हैं। (स्वामीजी ने) उस दलित को कहा तुम नित्यप्रति आकर यहां उपदेश सुनो। तुमको यहां कोई घृणा की दृष्टि से नहीं देखेगा। मुसलमानों के निकट भले ही तुम कैसे हो। स्वामी जी के ऐसा कहने से वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और फिर प्रतिदिन व्याख्यान सुनने आता रहा।"

रूड़की में ही स्वामीजी ने डार्विन के विकासवाद पर अपने चौथे दिन के उपदेश में विचार व्यक्त किए। इस उपदेश में डार्विन का विकासवाद, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव तथा साथ ही ईसाई व मुसलमानी दर्शन एवं पुराणों की भी सृष्टि-नियम विरुद्ध निरर्थक बातों की समीक्षा की गई। पाश्चात्य दर्शन को स्वामी जी अपने शब्दों में 'कीट पीट की फिलास्फी' कहा करते थे। शिक्षा के लाभ क्या हैं? और शिक्षा-विधियों का भी अपने उपदेश में उन्होंने विवेचन किया। अंग्रेजी राज की विशेषताओं तथा जो स्वतन्त्रता (धर्म प्रचार की) सरकार ने देशवासियों को प्रदान की है, उसके विषय में भी बहुत कुछ कहा। आपने डार्विन के इस मत का प्रतिवाद किया कि बन्दर से ही मनुष्य योनि का विकास हुआ है। आपने इसका प्रतिवाद करते हुए बड़ी प्रबल व अकाट्य युक्तियां दीं जिनमें से एक यह भी थी कि यदि बन्दर से ही मनुष्य का जन्म हुआ है तो क्या कारण है कि अब सहस्रों वर्षों के बीत जाने पर भी किसी बन्दर का बच्चा मनुष्य के रूप में उत्पन्न नहीं होता। यदि पहले कभी बन्दर मछली के रूप होकर विचित्र प्रकार का बच्चा उत्पन्न करता था और फिर यह विचित्र प्रकार से होते होते इसी क्रम का अन्तिम रूप मनुष्य हो गया तो अब इस क्रमिक विकास के बन्द हो जाने का क्या कारण हैं? विकासवाद से सम्बन्धित महर्षि दयानन्द के इन विचारों पर टिप्पणी करते हुए ग्रन्थ के अनुवादक आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने कहा है कि हमने इस प्रसंग को कुछ संक्षेप से दिया है। डार्विन मत की धज्जियां उड़ाने वाले विश्व के प्रथम विचारक ऋषि दयानन्द थे। बीसवीं शताब्दी में डार्विन मत की दुहाई देना एक वैचारिक फैशन बन गया था। विकासवाद को न मानने वालों की कालेजों, विश्वविद्यालयों में खिल्ली उड़ाई जाती थी। अब वह बात नहीं है।

विकासवाद पर बोलते हुए स्वामीजी ने आगे कहा कि क्या अन्तिम विचित्र प्रकार के प्राणी ने कोई वसीयत कर दी थी कि जैसी चेष्टा-कुचेष्टा मेरे पहले पूर्वज करते आए हैं, भविष्य में कोई पशु, विशेष रूप से बन्दर न करे। इस प्रकार से यह भी कहा कि विभिन्न जातियों के पशुओं के संसर्ग से बच्चे उत्पन्न नहीं हो सकते। ऋषि की इन युक्तियों को सुनकर सुपठित, अंग्रेजी शिक्षित लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। ऐसी युक्तियां उन्होंने कभी सुनी ही नहीं थीं। वे तो सकल ज्ञान-विज्ञान का आविष्कारक गोरों को ही समझते थे। अंग्रेजी पठित वर्ग यही जानता-मानता था कि पहले किसी को इनका ज्ञान ही नहीं था। स्वामी जी ने विज्ञान की इन खोजों के विषय में बहुत तार्किक ढंग से क्रमबद्ध विचार व्यक्त किये जो ऐसा लगा कि जैसे कोई दर्शन विषय का ग्रन्थ पढ़ रहे हों। इससे श्रोताओं को और भी आश्चर्य हुआ। जब किसी ने आपसे यह कहा कि हम इन सब विषयों को आधुनिक काल की देन समझते थे। यह सुनकर स्वामी जी ने देश की वर्तमान अवस्था पर अत्यन्त खेद व्यक्त किया और कहा कि आप किसी भी नवीन समझे जाने वाले आविष्कार का नाम लो, मैं उसका प्रमाण प्राचीन ग्रन्थों से दूंगा। तब कई सज्जनों ने पृथ्वी की गति, ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों, वर्षा, मेघों, भूकम्प, अमरीका के सम्बन्ध में कई प्रश्न पूछे। स्वामी जी प्राचीन शास्त्रों के अकाट्य प्रमाणों से उनका उत्तर देते थे। सुनने वालों को फिर कोई शंका ही शेष नहीं रहती थी। क्योंकि इधर प्रश्न किया तो उधर से साथ के साथ उत्तर रूप में कोई श्लोक आदि से सप्रमाण समाधान कर देते। श्लोकों मन्त्रों के शाब्दिक अर्थों से ही उनकी पूरी सन्तुष्टि हो जाती और सत्य शास्त्रों की गौरव गरिमा हृदयों पर अंकित हो जाती थी। श्री पं. उमरावसिंह ने आक्षेप किया कि पृथ्वी के गुरूत्व आकर्षण का नियम तो न्यूटन का आविष्कार है। यह पहले नहीं था। स्वामीजी ने कहा-सारी कहानी सुनाओ। उन्होंने न्यूटन द्वारा सेब के गिरने का अनुभव बताया। तब स्वामी जी ने एक श्लोक पढ़ा तथा उसके अर्थ सुनाए। श्लोक सुस्पष्ट था और उसके एक-एक शब्द का अनुवाद सब की समझ में आता था, अत: उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि श्लोक के रचयिता का पृथ्वी के गुरुत्व आकर्षण के नियम पर विश्वास था। स्वामी जी ने इसकी पुष्टि में कई वेदमन्त्र भी सुनाए। उनके अनुवाद से मूल विषय पूरा-पूरा स्पष्ट हो गया।

हम आशा करते हैं कि महर्षि दयानन्द के इन जन्मा जातिवाद विरोधी, समाज सुधार विषयक विचारों एवं विकासवाद के मिथ्या सिद्धान्त को सर्वप्रथम चुनौती देने वाले विचारों को जानकर पाठक लाभान्वित होंगे।

- मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी सम्पन्न

आर्य समाज की शिक्षा क्षेत्र में विश्व विख्यात संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में 13 से 15 मार्च 2015 को एक त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के वेद विभाग एवं महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित की गयी। गोष्ठी का विषय था "वैश्विक ज्ञान विज्ञान के परिपेक्ष्य में वेदों की प्रासंगिकता"। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं, वेद के प्रचार-प्रसार में जुड़ी अनेक संस्थाओं जैसे वेव्स आदि से 200 से अधिक शोध छात्रों, प्राध्यापकों व अन्य विद्वानों ने अपने अपने लेख व पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किये। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधित्व श्री ईश नारंग ने किया। उन्होंने अग्निहोत्र की वैज्ञानिकता पर एक अत्यंत रोचक व ज्ञान वर्धक प्रेजेंटेशन देकर सिद्ध किया कि जलवायु प्रदूषण, जो आज की एक ज्वलंत समस्या है, का निवारण केवल मात्र अग्निहोत्र से ही हो सकता है। आज के विज्ञान के पास इस का कोई उपाय नहीं है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि हमारे ऋषि वास्तव में वैज्ञानिक थे जो कि आज के वैज्ञानिकों से कहीं अधिक ज्ञान रखते थे।

संगोष्ठी की अध्यक्षता गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार ने की व मुख्य वक्ता पतंजली के आचार्य बाल कृष्ण थे।

- जनसम्पर्क अधिकारी, गु.कां. वि.वि.

संगोष्ठी को सम्बोधित करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मन्त्री श्री ईश कुमार नारंग जी

पृष्ठ 4 का शेष

आत्मिक ज्ञान और पुण्य .....

दे, मछली के गर्भ से ऋषियों को जन्म दे दे और स्वयं भी जन्म ले ले मेरी रक्षा के लिए, क्योंकि गर्दन जो झुकाता हूं।

इस प्रकार की भ्रान्तियों में फंसाकर अंध श्रद्धालुओं के साथ-साथ लिखे-पढ़ों को भी ऐसा ही पाठ सिखाते रहना पूजाविधि के ठेकेदारों का स्वभाव बन गया है। समस्त अज्ञान से दूर होना हो और सच्चा आस्तिक बनना हो तो राम-कृष्ण की भांति उसी ईश्वरोपासना को अपनाओ जो उन्होंने स्वयं अपनाई थी।

ईश्वर की साधना में आंतरिक भाव काम करते है। बाहर से, ऊपर-ऊपर से किये गए काम या व्यवहार नहीं। अगर आप दान अहंकारवश देते हैं कि चार लोगों में समाज में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लोग मुझे महादानी, महात्यागी, महा धार्मिक समझेंगे, वाह-वाह होगी, ताली बजेंगी सम्मान मिलेगा, विशेष पद मिलेगा, तो आपका मूल भाव अहंकार एवं लालच है। यह तामसिक दान है। तब आपको दुनिया की कोई शक्ति, कोई नियम वह पुण्य नहीं दे सकता, जिसे सात्विक श्रेणी में रखा जा सके। आपके भाव के अनुसार आपको क्षणिक सुख या तृप्ति तो मिल सकती है, लेकिन भविष्य में इसका परिणाम आपकी आशा के अनुकूल नहीं होगा। क्योंकि बीज गलत है अब यदि आप दान इस भाव से दे रहे हैं कि जा ले जा तू तो निकृष्ट है, मै उत्कृष्ट हूँ तो इस दान में भी अहंकार की पुट है और नकारात्मक फल ही मिलेगा। इसलिए भारत में इस भाव से 'दक्षिणा' शब्द का उपयोग किया कि आप कृतज्ञ हो रहे हैं कि सामने वाला आपका दान सहज स्वीकार कर रहा है अगर आप दान देकर कोई अपेक्षा रखते हैं तो याद रखें आप सच्चे दान के फल से वंचित ही रहेंगे। बल्कि यह एक स्वार्थमय दान भिखारीपन है, एक मांग है, एक लालच है, एक आकांक्षा है। तब फल भी आपको, इन भीतरी भाव के अनुसार ही मिलेगा। इसका अन्तिम परिणाम उस दुःख के रूप में मिलता है जो आपकी अपेक्षा की कसौटी पर खरा नही उतरता है।

- चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहबाद मोहम्मद पुर, नई दिल्ली-61, मो0 9871644195

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं आर्य समाज बाजार रानी बाग के तत्त्वावधान में

विद्यार्थियों के संस्कार, राष्ट्र भक्ति एवं चरित्र निर्माण हेतु

34 वाँ वैचारिक क्रान्ति शिविर

17 मई से 31 मई 2015 : आर्य समाज मंदिर मेन बाजार रानी बाग, दिल्ली

उद्घाटन समारोह- रविवार 17 मई 2015 सायं 6 बजे

यज्ञोपवीत संस्कार एवं संकल्प समारोह - रविवार 24 मई 2015 प्रातः 8 बजे

समापन समारोह- शनिवार, 30 मई 2015 सायं 5 बजे

विशेष : लगभग पिछले 46 वर्षो से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, भारत वर्ष के अनेक ग्रामीण एवं वनवासी क्षेत्रों जैसे आसाम, नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, उड़ीसा एवं राजस्थान इत्यादि प्रांतों के अशिक्षित लोगों में शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराने हेतु कार्यरत है। संघ द्वारा लगाए जाने वाले इस वार्षिक शिविर का मुख्य प्रयोजन है कि अनेक प्रांतों के ग्रामीण क्षेत्रों से कुछ युवक-युवतियों को बुलाकर यहाँ दिल्ली में 15 दिनों के शिविर में अपने पास रख उन्हें भारतीय संस्कृति का बोध कराकर इनके हृदय में राष्ट्रीय प्रेम एवं चरित्र निर्माण की भावना जागृत कर सकें, जिससे वे विविध प्रलोभनों और मिथ्या आकर्षणों से बचकर अपनी संस्कृति और गौरव की स्वयं रक्षा करें।

आप सबसे निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर वनवासी कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद देवें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल	**जोगेन्द्र खट्टर**	**अंजना चावला**	**यज्ञदत्त आर्य**
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान, आ.स.	मन्त्री, आ.स.

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• **प्रचार संस्करण (अजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• **विशेष संस्करण (सजिल्द)** 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पुण्य स्मरण

पं. शोभाराम प्रेमी: एक प्रेरक व्यक्तित्व

आर्य समाज के प्रारंभकाल से ही वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार में भजनोपदेशकों की महत्त्वपूर्णा भूमिका रही है। उस समय जबकि यातायात के साधन भी अत्यल्प थे, पुरानी पीढ़ी के भजनोंपदेशकों ने नगर व ग्राम-ग्राम में पहुँचकर अपने भजनोपदेश से वैदिक धर्म को दुन्दुभि बजाई है। उन्हीं पुरानी पीढ़ी के भजनोपदेशकों में आदरणीय पं. शोभाराम जी प्रेमी थे, जिनका 6 मार्च 2015 को 101 वर्ष की आयु में देहावसान हुआ। युवावस्था में आप आर्य जगत के यशस्वी सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संपर्क में आये। उनके सानिध्य में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों के अध्ययन से आपकी विचाराधारा में ऐसा परिवर्तन हुआ कि आपने वेद प्रतिपादित स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन आहूत कर दिया। आपने स्वरचित गीतों के माध्यम से वैदिक विचारधारा का नगर-नगर और ग्राम-ग्राम घूम कर अनेक कष्टों को सहन करते हुए प्रभावशाली ढंग से प्रचार-प्रसार किया।

वर्तमान में यातायात के अनेकों प्रकार के साधन उपलब्ध हैं। सड़कों का निर्माण भी खूब हुआ है। वैज्ञानिकों ने चलभाष आविष्कार करके विश्व को एक दूसरे के निकट ला दिया है। अपने घर परिवार एवं इष्ट मित्रों की कुशलता का समाचार जब चाहो तुरन्त मिल जाता है। परन्तु जिस समय कि यहाँ चर्चा की जा रही है, उस समय स्थिति इसके विपरीत थी। मार्ग ऊबड़ तथा यातायात के साधन भी बहुत कम थे। कई-कई मील पैदल चलना पड़ता था। मोबाईल की तो उस समय कल्पना तक नहीं थी। प्रचारार्थ घर से बाहर निकलने के पश्चात् महीनों तक परिवार की कुशलता का पता नहीं चल पाता था। उसी युग के एक कवि ठाकुर उदय सिंह ने तत्कालीन उपदेशकों की दशा का इस प्रकार मार्मिक चित्रण किया है-

शीश पर बिस्तर और बगल में छतरी लगी, एक हाथ बैग दूजे बाल्टी सम्भाली है।
दिन गया धक-धक में रात गई बक-बक में, कभी अपच और कभी पेट खाली है।
जंगल में दशहरा और सड़क पर सलूना, मोटर में होली और रेल में दीवाली है।
पुत्र मरा सावन में पत्र मिला फागुन में, ठाकुर उपदेशकों की दशा भी निराली है।

उन्हीं वैदिक धर्म के दीवानों में श्रद्धेय पं. शोभाराम जी प्रेमी थे, जिन्होंने शारीरिक कष्टों की कुछ भी परवाह न करते हुए अपना सारा जीवन महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की विचार धारा का प्रचार प्रसार में आपका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक रहा है। प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में आपने न केवल स्वयं को अपितु अनेक रोगियों को उचित परामर्श देकर स्वस्थ एवं निरोग किया।

आपकी प्रचार शैली अत्यन्त रोचक एवं प्रभावशाली रही। आप सदा मंच के धनी रहे हैं। आपने अपने जीवन में अनेकों आर्य समाजों की स्थापना की। अनेकों वर्षो तक स्वामी कल्याण देव जी के साथ रह कर अनेक ग्रामों व नगरों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त भारत के स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में बढ़-चढ़कर कार्य किया। हिन्दी सत्याग्रह में जेल की यातनाएँ सही। आपने भारत के तीन प्रधानमंत्रियों (पं. जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री और चौ. चरण सिंह जी) के विशेष आग्रहों पर उनके मंचों से वैदिक विचारधारा का प्रचार करके आर्य समाज का गौरव बढ़ाया। आपने अपने जीवन काल में अनेकों ऐसे शिष्य बनाये जो आज बड़े ही प्रभावशाली ढंग से वैदिक धर्म का प्रचार कर हैं। इसके साथ ही आपने वैदिक सिद्धांतानुकूल हजारों गीत लिखे हैं। आपके चुने हुए गीतों की लगभग तीन सौ पृष्ठों की पुस्तक ''प्रेमी भजन मंजूषा'' के नाम से प्रसिद्ध दानवीर स्व. चौ. मित्र सेन जी आर्य के आर्थिक सहयोग से कुछ वर्ष पहले प्रकाशित हो चुकी है।

जीवन के लगभग 80 वर्ष की दीर्घावधि में जो प्रेमी जी ने कार्य किया है, उसे देखते हुए अनेकों आर्य समाजों, संस्थाओं ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया है। कुछ वर्ष पहले श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी ने मेरठ में प्रेमी जी का जोरदार अभिनन्दन किया था। एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई थी, जिसका सम्पादन श्री धर्मवीर जी शास्त्री ने किया। मैं नियमित रूप से प्रेमी जी के साथ कभी नहीं रहा। यदा कदा आर्य समाजों के उत्सवों में उनके दर्शन करने तथा भजनोपदेश सुनने का सौभग्य प्राप्त होता रहा। एकान्त में भी वार्तालाप करने का अवसर मिलता रहा। प्रेमी जी के गीतों, प्रवचनों तथा व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बहुत पहले ही मैंने उन्हें गुरुरूप में स्वीकार किया था।

निगाहें कामिलों पर पड़ ही जाती है ज़माने की कहीं छिपता है अकबर फूल पत्तों में निहाँ होकर ? विस्तारभय से अधिक न लिखते हुए मैं प्रेमी जी के प्रति हार्दिक श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

- सत्यपाल मधुर, अध्यक्ष,
भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् - दिल्ली (9899351375)

आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहदरा का 49वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रोहतास नगर, शाहदरा के 49 वें वार्षिकोत्सव का समापन 5 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं महामंत्री श्री विनय आर्य विशिष्ट अतिथि तथा भजनोपदेशक के रूप में श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने मानव जीवन में वैदिक संस्कारों, शिक्षाओं व आदर्शों को महत्वपूर्ण व आवश्यक बतलाया।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अन्धविश्वास को आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उत्थान में बाधक बतलाते हुए महर्षि दयानन्द के दिखलाए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इस अवसर पर जन सामान्य के साथ-साथ आर्य केन्द्रीय सभा की उप प्रधाना श्रीमती उषा किरण आर्या, मंत्री श्री अभिमन्यु चावला, आर्यसमाज रोहतास नगर से श्री मनमोहन मेहता, कोषाध्यक्ष श्री जगदीश चन्द्र मंत्री श्री सुखबीर सिंह त्यागी, नरेश सैनी, श्रीमती विजय रानी, शशि सराफ एवं संरक्षिका सुश्री सुषमा यति उपस्थित थे।

- रामपाल पांचाल, प्रधान

श्री राम जन्मोत्सव पर स्वस्ति यज्ञ

'मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जन्मोत्सव पर आर्य समाज जयपुर दक्षिण में हिण्डौन हाउस में 'स्वस्ति यज्ञ' द्वारा मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति हेतु आहुतियाँ दीं। श्री राम किशोर शर्मा ने 'राजतिलक को खेल बनाकर खेलने लगे खिलारी, इधर राम और भरत ने राज को ठोकर मारी' गीत की भाव पूर्ण प्रस्तुति हुई ।

- मन्त्री

प्रवेश प्रारम्भ

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6,7 व 8 वीं में प्रवेश प्रारंभ हो गया है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द वि. विद्यालय से उत्तीर्ण छात्र का 9 वी, 10 वी, 11 वी, व 12वी, में भी प्रवेश प्रारंभ हो गया है। निर्धन छात्रों का सम्पूर्ण खर्च गुरुकुल वहन करता है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

- आचार्य सुधांशु, मो. 8800443826

प्रवेश सूचना

उत्तर प्रदेश के पूर्वान्चल में स्थित वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम महर्षि दयानन्द नगर, धनपतिगंज, जिला-सुल्तानपुर में नवीन सत्र 2015-2016 के लिए अप्रैल के प्रथम सप्ताह से प्रवेश प्रारंभ हो रहा है। गुरुकुल में न्यूनतम आठ वर्ष के स्वस्थ बालक का ही प्रवेश, प्रवेश परीक्षा के उपरांत सम्भव हो सकेगा। प्रारम्भ से उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद तथा शस्त्री, आचार्य की सम्बद्धता महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से है। इच्छुक अभिभावक तुरन्त सम्पर्क करें ।

- आचार्य, मो. 9450783337

आर्य समाज सी ब्लॉक जनकपुरी का वार्षिकोत्सव समारोह

16 से 19 अप्रैल 2015
समापन समारोह : 19 अप्रैल, 2015
यज्ञ : प्रात: 7:30 बजे
प्रवचन : डॉ. धर्मवीर जी (अजमेर)
भजन- श्री संदीप आर्य (दिल्ली)
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- अजय तनेजा, मन्त्री

आर्य समाज रामगली हरी नगर का 42वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रामगली सी -13 हरी नगर घंटाघर नई दिल्ली -64 का 42वाँ वार्षिकोत्सव व सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रवचन आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री, भजन श्री हरीशंकर गुप्ता व रमाशंकर के हुए। आशीर्वाद महात्मा रामकिशोर जी व श्री देवराज 'आर्यमित्र' ने प्रदान किया। समारोह में मुख्य अतिथि श्री के.बी.एल. दुबे थे। इस अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता श्री हरीचंद वर्मा व इनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवती वर्मा जी का सम्मान किया गया।

- श्रीपाल आर्य, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज हडसन लाइन
जी.टी.बी. नगर, दिल्ली-110009

प्रधान - श्री मनमोहन सिंह
मन्त्री - श्री देवेन्द्र कुमार
कोषाध्यक्ष - श्रीमती सुरेश अरोड़ा

आवश्कता है

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा निम्नलिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. ग्राफिक्स डिजाइनिंग (अनुभवी)
2. हिन्दी स्टैनों (हाई स्पीड)
3. हिन्दी टाइपिस्ट, ऑपरेटर, एकाउन्टेन्ट
4. कम्प्यूटर ऑपरेटेर (नेट एक्सपर्ट)
5. ड्राइवर :- (पश्चिम/मध्य दिल्ली)

इच्छुक अभ्यर्थी अपना बायोडाटा ईमेल करें - ***मो. 9650183339***

Email- aryasabha@gmail.com

वर चाहिए

आर्य परिवार की सुन्दर, स्वस्थ, संस्कारी गृहकार्य में दक्ष कन्या, अग्रवाल, एरन गोत्र, लम्बाई 5'1'' एम.कॉम/बी.एड. जन्मतिथि 27 अप्रैल 1986 हेतु सुन्दर, स्वस्थ, आर्य विचारधारा की मान्यताओं वाला, सर्विसमेन अथवा बिजनेस मेन, वर चाहिए। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें- ***मो. 09837773024***

आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव

आर्यसमाज कीर्ति नगर का 59 वाँ वार्षिकोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव 23 से 29 मार्च तक उल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। इससे पूर्व 19 से 22 मार्च तक प्रभातफेरी प्रतिदिन प्रभातफेरी का आयोजन हुआ। दिनांक 23 से 28 मार्च तक अथर्ववेदीय यज्ञ आचार्य शिवदत्त पाण्डेजी के ब्रह्मत्व में तथा डॉ. ऋषिपाल शास्त्री जी के सहयोग तथा गुरुकुल खोड़ा खुर्द ब्रह्मचारियों के वेद पाठ से हुआ। भजन पं. दिनेश पथिक के हुए। सायंकालीन यज्ञ -भजन-आध्यात्मिक दिव्य सत्संग का कार्यक्रम प्रतिदिन कीर्तिनगर के विभिन्न पार्कों के प्राकृतिक वातावरण में आयोजित हुए। यज्ञ पूर्णाहुति 29 मार्च को हुई जिसमें में 209 यजमानों ने अपनी आहुति प्रदा न की। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार, आचार्य शिवदत्त पाण्डे के उद्बोधन हुए। आर्य सम्मेलन के मुख्य अतिथि दानवीर आर्य नेता महाशय धर्मपाल जी व अन्य विद्वानों का ''ओ३म्'' स्मृति चिह्न देकर अभिनन्दन किया गया।

- सतीश चड्ढा, मंत्री

विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा एवं आर्य समाज मोतिहारी के तत्त्वावधान में 21 से 24 मार्च तक चम्पारण जिला आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर 'विश्व कल्याण महायज्ञ' धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी (दिल्ली) स्वामी सदानन्द सरस्वती (दीनानगर पंजाब), डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी) एवं अन्य विद्वानों ने आर्य समाज, महर्षि दयानन्द एवं वेद की शिक्षाओं से जन मानस को अवगत कराया तथा भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी सरल एवं पं. कुलदीप जी विद्यार्थी ने सुमधुर भजनों से श्रोताओं को भाव विभोर किया। प्रसिद्ध कवि श्री संजय सत्यार्थी (पटना) ने अपने सुन्दर काव्य प्रस्तुति से सभी को गद्गद् कर दिया।

- देवेन्द्र चन्द्र आर्य, मन्त्री

यज्ञ- प्रवचन

सीनियर सिटीजन्स फोरम् की ओर से मानसरोवर अग्रवाल फार्म एस.एफ. एस. स्थित डे केयर सैण्टर पर यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक प्रवक्ता यशपाल 'यश' ने वैदिक मंत्रों का अर्थ व मर्म समझातें हुए आहुतियां दिलवाईं।

आर्य समाज एवं आर्ष गुरुकुल हडसन लाईन का 141वाँ स्थापना दिवस

आर्य समाज मंदिर एवं आर्ष गुरुकुल के हडसन लाईन जी.टी.बी. नगर के तत्त्वावधान में 141वाँ स्थापना दिवस समारोह धूम धाम से सम्पन्न हुआ। 21 मार्च को प्रात: 10 बजे यज्ञ के पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की विभिन्न प्रतियोगिताएँ हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई। 22 मार्च को यज्ञ पूर्णाहुति व समारोह सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं महामन्त्री विनय आर्य ने प्रेरक उद्बोधन दिए।

- वेद प्रकाश सरदाना, मन्त्री

चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ

शनिवार 25 अप्रैल, 2015
स्थान : ग्राम चिखलीकलां, जि. छिन्दवाड़ा (नागपुर रोड राजकीय विद्यालय से पूर्व की ओर रेलवे क्रासिंग के निकट)
यज्ञ : प्रात: 7:00 बजे
भजन : श्रीमती दया आर्या
प्रवचन : आचार्य कर्मवीर जी
आचार्य सत्यप्रिय जी एवं
श्री राममुनि जी
आप सब पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

- आचार्य ऋषिदेव आर्य

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों पर भारी छूट

एक के साथ एक फ्री
Buy One Get One

आँवला कैंडी (500ग्राम)	160/-
आँवला कैंडी (1 किग्रा)	294/-
मधुमेह नाशनी (50ग्राम)	206/-
गुरुकुल चाय (200 ग्राम)	125/-
गुरुकुल चाय (100 ग्राम)	61/-
गुलकन्द (200 ग्राम)	114/-

छूट - पहले आओ - पहले पाओ के आधार पर (केवल स्टॉक रहने तक) प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 9540040339

Email- aryasabha@yahoo.com

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/- किलो (10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 5 किलो, 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

8 साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 6 अप्रैल से रविवार 12 अप्रैल, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 9/10 अप्रैल, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 अप्रैल, 2015

सार्वदेशिक आर्य की वीरांगना दल के तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्म रक्षण शिविर

18 से 28 जून 2015

स्थान- एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्याओं में शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल और वैदिक सिद्धांतों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार के निर्माण में अहम् भूमिका निभाने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल यह शिविर आयोजित कर रहा है। समस्त प्रान्तीय सभाओं एवं आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने अन्तर्गत लगने वाली आर्य वीरांगना दल की अधिकाधिक आर्य वीरांगनाओं को शिविर में भाग लेने के लिए प्रेरित करें तथा अधिकाधिक सहयोग भी प्रदान करें।

-: निवेदक :-

साध्वी उत्तमा यति	मृदुला चौहान	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान संचालिका	संचालिका	विद्यालय प्रधान	विद्यालय मैनेजर

प्रतिष्ठा में,

वनवासी आर्य गुरुकुल आर्य समाज दयानंद विहार दिल्ली के छात्रों का स्कूल में शानदार प्रदर्शन

आर्य समाज दयानन्द विहार दिल्ली के अंतर्गत चल रहे वनवासी आर्य गुरुकुल के छात्रों ने वार्षिक परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया है, ब्रह्मचारी विमल आर्य व रोमन आर्य जो दोनों चतुर्थ कक्षा के विद्यार्थी थे, ने अपनी कक्षा में क्रमशः प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया है। विमल आर्य को संगीत में भी Mohna Venugopal Award for Music पुरस्कार मिला है। ब्रह्मचारी बामन आर्य ने तीसरी कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। शेष छात्र भी 60 से 84 प्रतिशित अंक ले कर उत्तीर्ण हुए है।

– ईश नारंग, मन्त्री

ऐतिहासिक घटनाएं भेजें

सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि जिस किसी सज्जन को आर्य समाज के इतिहास की कोई घटना, किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित किसी ऐतिहासिक तथ्य अथवा घटना की जानकारी हो, तो aryasandeshdelhi@gmail.com पर ईमेल भेजकर कृतार्थ करें। अध्येताओं एवं शोधकर्त्ताओं से अनुरोध है कि अपने आर्य समाज से सम्बन्धित अथवा वैदिक ज्ञान विज्ञान के शोधपूर्ण लेख समाजकल्याण हेतु उपरोक्त ईमेल आईडी पर भेजने की कृपा करें जिससे जन सामान्य को लाभ प्राप्त हो सकें।

– सम्पादक

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

– सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह